सादर प्रकाशनार्थ

मुनि जयंत कुमार

"संस्कारों से विमुख होती भावी पीढ़ी"

एक गांव में घर की दूसरी मंजिल पर बने कमरे में खड़ा था। गांव का निरव वातावरण मन को असीम शांति से सरोबर कर रहा था। इस शांति ने मुझे गांवो की ओर आकर्षित किया। लगा आज गांवो में भारत की प्राचीन छवि को देख सकते हैं। यहां की जीवनशैली में देश की आध्यात्म परम्परा जागृत है। देश की खातिर कुछ कर गुजरने का जज्बा है। ऐसे ही विचारों में खोया हुआ था कि एक शब्दावली ने मुझे चकित कर दिया। पास ही के झोपड़ीनुमा घर में मां की डांट पर छोटे बालक के मुंह से निकलने वाली वो शब्दावली थी "राम नाम सत्य है थारो बेटो अठे कोनी बैठे है" इस तरह के बोल एक बच्चे के मुंह से निकलना और वो भी गांव के बालक के मुंह से, जहां पर न ऐशो-आराम है, न बिगड़ैल वातावरण है। फिर इन बच्चों में क्यों माता-पिता के प्रति विद्रोह की भावना पैदा हो जाती है। क्यों बचपन में ही गाली-गलोच और निम्न स्तर की भाषा का प्रयोग करने लग जाते हैं। इतना तो शुक्र है कि गांवों के बच्चे हद पार नहीं करते पर शहरी वातावरण में रहने वाला बालक गोली से उड़ाने की धमकी तक दे देता है। विदेशों के स्कूलों में तो ऐसी घटनाएं घट चुकी हैं। छोटी सी उम्र में हिंसा का संचार, गोली की भाषा यह कहां तक उचित है?

इन प्रश्नों के समाधान हेतु मस्तिष्क में मंथन प्रारम्भ हो गया। जो कुछ समय पहले शांति के हिलोरे ले रहा था वही मन संस्कारों से विमुख होती भावी पीढ़ी के लिए तड़प उठा। अनेक पहलुओं पर समग्र दृष्टियों से मंथन करने के बाद इन बिन्दुओं पर ध्यान गया।

* शिक्षा का अभाव :– भारत सरकार शिक्षा के लिए जागरूक है। पर सरकारी कार्य कितने जमीनी होते हैं, यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है। इसका अहसास हमने गांवो की पदयात्रा में किया। हमने ऐसे अनेक गांव देखे जहां विद्यालय केवल पोषाहार तक सीमित हो गये हैं। कहीं पर शिक्षा पर ध्यान दिया जाता है तो 60% बच्चे ही उस तक पहुंच पाते हैं। इस कमी के साथ एक महत्त्वपूर्ण कमी ध्यान में आई, वो है शिक्षा को केवल किताबी ज्ञान तक समेट दिया गया है। उसमें संस्कार निर्माण पर दृष्टिपात ही नहीं किया गया है। प्राचीन परम्परा में शिक्षा के साथ सद्संस्कारों का बिजारोपण किया जाता था। आज अपेक्षा है गांवो में बसने वाले बच्चों के अभिभावकों में शिक्षा एवं संस्कार के प्रति जागरुकता पैदा की जाए और शिक्षा में सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाए।

* टेलीविजन की पहुंच :– गांवो में रहने वाले ऐसे अनेक परिवार देखने को मिले जिनके पास रहने का पक्का मकान नहीं है और पहनने को साफ-सुथरे कपड़े नहीं है, पर उन घरों में टेलीविजन जरुर है। आज टेलीविजन छोटे से छोटे गांव में, ढाणी में पहुंच गया है। गरीब

Generated by CamScanner from intsig.com